नागार्जुन की कविताओं में राजनैतिक चेतना

राजनारयण शुक्ल

एस0डी0 कॉलेज गाजियाबाद

सांराश

नागार्जुन की कविताओं की समसाययिकता उनकी व्यवहारिक राजनीतिक समय को स्पष्ट करती है। ऐसा नही है कि उनकी कविताऐं केवल तत्कालीन समय के लिए ही उपयुक्त है और वह आज के समय के लिए प्रासंगिक नही है। या कि वह सम्पूर्ण युग की व्याख्या के उपयुक्त नही है। वस्तुतः कवि की रचनाओं की यह एकांगी व्याख्या ही गलत है। हमें उसके व्यक्तित्व को उसके पूरे रचना संसार में रखकर ही परखना चाहिऐ। जीवन की किसी भी हलचल को वे अलक्ष नहीं करते। राजनीति आज जीवन के सभी अंगों पर हावी है। उसने मनुष्य की सम्पूर्ण चेतना को प्रभावित किया है। इसलिए नागार्जुन जब आम आदमी की बात करते है तो राजनीति की भी बात होती है। वह देश प्रेम के रूप में हो सकती है, सरकारी नीतियों पर हो सकती है, उसकी कुव्यवस्था पर हो सकती है। और लोकतन्त्र की बहाली पर भी हो सकती है। सम्भवतः वह अपने समय के गिने चुने कवियों में थे। जिन्हें राजनीति के अपराधीकरण का स्पष्ट आभास हो रहा था। और एक जन कवि होने के नाते वे उसे उठा पा रहे थे।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

राजनारयण शुक्ल,

नागार्जुन की कविताओं में राजनैतिक चेतना,

शोध मंथन, दिस0 2017,
पेज सं0 12-17,
Artcile No. 3 (SM 463)

http://anubooks.com/?page_id=581

नागार्जुन की कविताओं में एक तरह की तात्कालिकता दृष्टिगोचर होती है। उनकी कविताओं की यह सम सामयिकता उनकी व्यवहारिक राजनैतिक समझ को ही स्पष्ट करती है। ऐसा नहीं है कि उनकी कवितायें तत्कालीन समय के लिए ही उपयुक्त है और आज के समय में प्रांसगिक नही हैं या कि वह सम्पूर्ण युग की व्याख्या के उपयुक्त नहीं है। वस्तुतः कवि को रचनाओं की यह एकांगी व्याख्या ही गलत है। हमें उसके व्यक्तित्व को उसके पूरे रचना संसार में रखकर ही परखना चाहिए। ऐसे में उनकी तात्कालिकता का वह भ्रम समाप्त हो जाता है। जीवन की किसी भी हलचल को वे अलक्ष्य नही करते। नागार्जुन पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव है। यह उनकी कविताओं में स्पष्ट परिलक्षित होता है। यह उनकी आधुनिक दृष्टि बौद्ध में भी दिखती है। उनकी वैचारिक प्रखरता में भी और उनकी राजनैतिक चेतना में भी। राजनीति आज जीवन के सभी अंगों पर हावी है। उसने मनुष्य की सम्पूर्ण चेतना से प्रभावित किया है। इसीलिए नागार्जुन जब आम आदमी की बात करते हैं तो राजनीति की भी बात होती है। वह देश प्रेम के रूप में हो सकती है। सरकारी नीतियों पर हो सकती है, उसकी कुव्यवस्था पर हो सकती है और लोकतन्त्र की बहाली पर भी हो सकती है। देश प्रेम की भावना कवि के अन्तरमन को विहवल करती है वह अपनी मातृभूमि और देश को कभी भुला नही पाते। लीचियों एवं आम से भरे बगीचे, हरी–भरी धरती, धान, कमल, उन्हे सब याद हैं। वह कहते है–

याद आता मुझे अपना वह तरउनी ग्राम
याद आती लीचियॉ वे आम
याद आते मुझे मिथिला के रूचिर भू–भाग
याद आते धान
याद आते कमल, कुमुदिन और ताल मखान
याद आते शस्य श्यामत्न जनपदों के
रूप गुण अनुसार रक्खे गए वे नाम
याद आते वे भुवन के वे नीतियों के निलय, अति अभिराम
धन्य वे जिनके मृदुल मतम अकं
हुए थे मेरे लिए पर्यक
धन्य वे जिनकी उपज के भाग
अन्न पानी और भाजी साग।
फुल–फल और कंद–मूल अनेक बिधू–मधु–मास
विपुल उनका ऋण, सधा सकता न मैं दशमांश[1]

मिथिलांचल उन्हें बार–बार स्मरण होता है। वह उनकी अपनी धरती है। अपने स्वजन है वह उन्हें नही भूल पाते जिनकी गोद में वे खेले हैं। वह कहते है कि वे मिथिलांचल के अपने लोगों का ऋण कभी नहीं चुका पाउगा। नागार्जुन को जितना प्रेम अपनी मातृभूमि अपने स्वजनों

से है उससे कहीं अधिक वह अपने समाज अपने देश से प्रेम करते है। वह मिथिलांचल ही नही सम्पूर्ण समाज का मंगल चाहते है। 'हटे दनुज दल, मिटे अमंगल– 'शीर्षक कविता में नागार्जुन के समाज प्रति कल्याण की यह भावना मुखरित हुई है।

पुलकित तन हो
मुकलित मन हो
सरस और सक्षम जीवन हो
प्राणों से भी बढ़कर प्यारी।
बने स्वर्ग यह भूमि हमारी
सर्व सुखद सुन्दर समाज हो
सबके मुह पर अतुल कांति हो[2]।

वह सम्पूर्ण वसुन्धरा को अपना मानते है। देश के कण–कण के प्रति अपने सर्वस्व समर्पण का यह कितना सुन्दर उदाहरण है–

खेत हमारी, भूमि हमारी, सारा देश हमारा है।
इसीलिए तो, हमकों इसका चप्पा–चप्पा प्यारा है[3]

स्वतन्त्रता के पश्चात वर्षों तक देश की उन्नति की राह देख रही जनता थककर निराश हो गई। देश की अवस्था दिनों दिन जर्जर होती गई। शासक वर्ग भ्रष्टाचार में डूब गया और जनता गरीब होती गई। देश की भूखी दीन–हीन जनता का बड़ा ही मौलिक वर्णन उन्होंने किया है–

मन करता है
नंगा होकर आग लगा, जो पहन रखा है उसमें भी फिरबनूं
दिगम्बर बमभोला
नंगा होकर विषवान करूँ सागर–तट पर
ओ कालकूट तू कहॉ गया?
ओ हलाहल तू कहॉ गया?
अत्येष्टि करूँ, लकड़ी तो बेहद मंहगी है।
इस बालू में दफना दूं
नंगा करके[4]।

कवि देश की इस दशा का कारण देश के राजनेताओं को मानता हैं। वह राजनेताओं का असली रूप जनता के सामने रख देते है। देश के नेता बिल्कुल स्वार्थी हो गए है। देश की बिगडती स्थिति से उन्हें कोई लेना–देना नही है–

पेट–पेट में आग लगी है, घर–घर में फाका

यह भी भारी चमत्कार है, कांग्रसी महिमा का
सूखी आंतों की ऐंठन का हमने सुना धमाका
यह भी भारी चमत्कार है, कांग्रेसी महिमा का
महज विधानसभा का सीमित, जनतन्त्री खाका
यह भी भारी चमत्कार का कांगेसी महिमा का
तीन राज में तेरह जगहों पर पड़ता है, डाका
यह भी भारी चमत्कार है, कांग्रेसी महिमा का[5]।

नागार्जुन ने सरकार के कुशासन का भेडाफोड़ इन पंक्तियों में बड़ी ही निर्भीकता से किया है। यही नहीं राजनीति के अपराधीकरण का संकेत उन्हे इसके प्रारम्भ में ही मिल गया था।

सम्भवतः अपने समय के वह गिने चुने कवियों में थे जिन्हें राजनीति के अपराधीकरण का स्पष्ट आभास हो रहा था और उसे एक जन कवि होने के नाते कविताओं में उठा पा रहे थे। वेतन भोगी टहलुआ नही है 'शीर्षक कविता में एक तत्कालीन अपराधी विधायक पर बेलाग टिप्पणी करते हुए वे कहते है–

ठीक है ठीक है,
आप आसन त्यागी विधायक हैं
ठीक है ठीक है,
अपने क्षेत्र में आप लोकप्रिय हैं।
ठीक है ठीक है,
बहुपठित एवं बहुश्रुत है।
ठीक है ठीक है,
आप उच्च श्रेणी के बन्दी है, विचाराधीन
ठीक है ठीक है,
महीना पन्द्रह रोज बाद हजूर
जमानत पर छूट कर बाहर निकल जायेगें[6]।

नगार्जुन की यह टिप्पणी वर्तमान युग के अधिकांश नेताओं पर कितनी सटीक बैठती है सभी जानते है राजनीति का अपराधीरकरण देश की राजनीति के लिए एक गम्भीर राष्ट्रीय समस्या बन चुका है। विधानसभाओं में यहॉ तक कि देश की संसद में भी चुने हुए आपराधिक चरित्र के नेताओं का दबदबा है। वह देश की

नीतियों को प्रभावित करने की स्थिति में पहुच गए हैं। देश को इस दशा से और उस दशा के लिए जिम्मेदार देश के नेताओं के प्रति क्षुब्ध देश की जनता का आक्रोश बढता ही जा रहा था। देश में स्थान–स्थान पर विद्रोह सुलग उठा था। उसी समय एक जन आन्दोलन का नेतष्त्व कर रहे जय प्रकाश

नारायण पर सरकार ने लाठियॉ भांज दी। अपनी कविता में उस घटना को चित्रित करते हुए नागार्जुन कहते है–

एक और गॉधी की हत्या होगी अब क्या?
बर्बरता के भोग चढेगा योगी अब क्या
पोल खुल गयी शासक दल के महामन्त्र की।
जय प्रकाश पर पडी लाठियॉ लोकतन्त्र की।
भटक गया है देश दलों के बीहड़ वन में।
कदम–कदम पर संशय ही उगता है मन में[7]।

श्रीमति इन्दिरा गॉधी की क्रूरता बढती गई। देश की जनता दमन चक्र में त्राहि–त्राहि कर उठी लेकिन अन्धकार के घोर वातावरण में भी देश के युवाओं, छात्रों ने विद्रोह का झंडा उठा लिया। जन आन्दोलन से घबराकर इन्दिरा गॉधी ने आपातकाल हटा कर चुनाव की घोषणा कर दी। देश की जनता को पुनः अपनी इच्छित सरकार गठित करने का अवसर हाथ आया। करोड़ो मतपत्र जादू के वाण बन गए। भारतमाता में फिर प्राण वापस आए। इस स्थिति में नागार्जुन 'तीस साल में बाद शीर्षक कविता में लिखते है।

शासक बदला झंडा बदला, तीस साल के बाद
नेहरू–शास्त्री और इन्दिरा हमें रहेगें याद
जनता बदली, नेता बदले तीस साल के बाद
कोटि–कोटि मतपत्र बन गए जादू वाले वाण
मूर्छित भारत मॉ के तन में वापस आए प्राण
प्रभुता की पीनक में नेहरू पुत्री थी मदहोश
जनगणमन में दबा पड़ा था बहुत–बहुत आक्रोश
नसबन्दी के जोर जुल्म से मचा बहुत कोहराम
किया सभी ने इस शासन को अन्तिम बार सलाम[8]

आपातकाल का काला अध्याय समाप्त हुआ। लोकतन्त्र की हत्या करने वालों को जनता ने अपने मतपत्रों के बल पर उखाड़ फेंका। जनता द्वारा चुनी गई नई सरकार आ गई। नागार्जुन ने उस सरकार के समर्थन में भी लिखा उनके अनुसार वह जनता द्वारा चुनी गई सरकार थी इसलिए नागार्जुन के अन्दर रचनात्मकता का दूसरा पहलू उभरने लगा। उन्होंने कहा कि राजनीति इनके लिए केवल भावात्मक स्तर पर ही है। इससे स्पष्ट करते हुए वह 'तकली मेरे साथ रहेगी' शीर्षक कविता में कहते है–

राजनीति के बारे में अब एक शब्द भी नही कहूंगा। तकली मेरे साथ रहेगी, मैं तकली के साथ रहूगॉ। राजनीति का जिक्र करूॅगा थोड़ा–थोड़ा Åपर–Åपर।

इससे यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि नागार्जुन के लिए राजनीति केवल वहीं तक जरूरी है जहॉ तक उसमें जनता का हित है इससे अलग राजनीति में उनकी रूचि बिल्कुल नहीं है तभी तो उनकी राजनीतिक विचार धारा में कई जगह उतार चढाव देखने को मिलते है। कई जगह वह जन विरोधी राजनीति को कोसते है या जनहित की सरकार का समर्थन करते दिखाई पड़ते हैं। वस्तुतः वह जनकवि पहले है और एक राजनैतिक विचारक बाद में बल्कि वह राजनैतिक विचार से भी हटकर अपने हाथ में तकली पकड़ लेते है। निष्कर्षतः उनकी राजनैतिक चेतना का सत्य यही है।

सन्दर्भ–

01– नागार्जुन 'सतरंगे पंखा वाली' दिल्ली, 1984 प0–49

02– उपरिवत, प0–46–47

03– नागार्जुन, 'चुनी हुई रचनाए' नई दिल्ली 1985 प0–59

04– उपरिवत प0–37–38

05– उपरिवत प0–96–97

06– नागार्जुन 'खिचडी विप्लव देखा हमने' 1980 प0–63

07– उपरिवत प0–14

8– उपरिवत प0–84